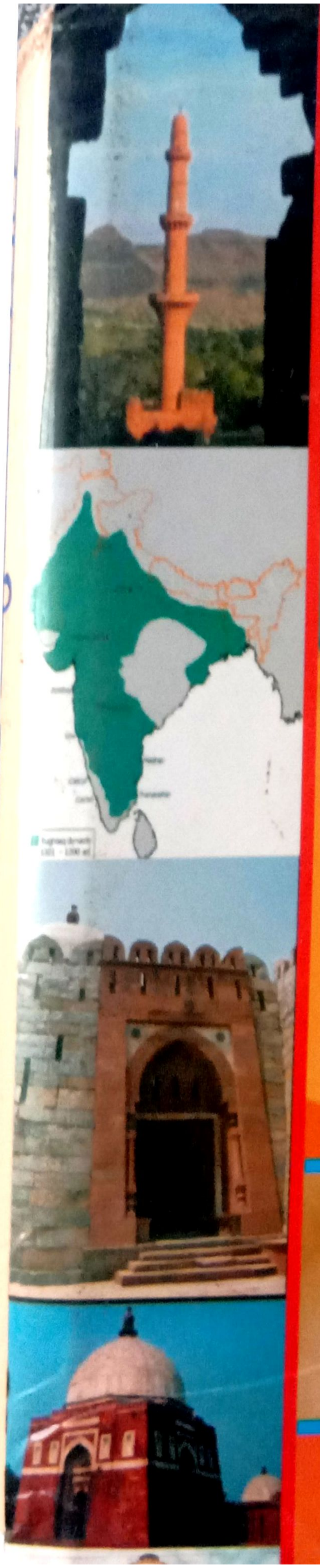




तुगलककालीन भारत



डॉ. शाहिद अहमद

जज़िया कर लगा दिया कि वे हिन्दुओं का नेतृत्व करते थे, इसलिये उन्हें इस टैक्स से कैसे मुक्त रखा जा सकता है। फ़िरोज़ तुगलक कट्टर धर्मी उल्मा के हाथ में खिलौना बना रहा और लोगों की प्रार्थनाओं का उस पर तनिक भी प्रभाव नहीं हुआ। जब फ़िरोज़ तुगलक ने ब्राह्मणों पर जजियां लगाने का निर्णय लिया तो उसके इस निर्णय के खिलाफ एक तूफान उठ खड़ा हुआ। ब्राह्मण उसके महल के

'फतुहात-ए-फ़िरोज़शाही' में लिखा है कि फ़िरोज़ तुगलक पूर्ण अमन-शान्ति के समय एक बार घोड़े पर सवार होकर मलोह नामक गांव में गया जहां एक सरोवर के किनारे पर बहुत सारे हिन्दू पूजा करने के लिये एकत्रित हुए थे और वहां एक मेला लगा हुआ था। उसने न केवल हिन्दुओं को बल्कि उनकी हो रही पूजा को भी रोका। साथ ही मन्दिरों व बुत नष्ट कर दिये और पूजा कर रहे लोगों को मारने का आदेश जारी कर दिया।[33]

मुहम्मद तुगलक एक ऊंचे विचारों वाला व्यक्ति तथा विद्वान सुल्तान था। वे धार्मिक नेताओं को अपने राज्य प्रबन्ध में दखल नहीं देने देता था। उसने ऐसे दखल के लिये कई बार आलमों, सैय्यदों तथा धार्मिक वर्ग के लोगों को दण्ड देने से भी संकोच नहीं किया। उसने उल्माओं की सलाह का उल्लंघन अला-उद्-दीन से भी अधिक किया और उनके विरोध की कोई परवाह नहीं की। डॉ० ईश्वरी प्रसाद लिखता है कि, मुहम्मद

मुसल...

अला-उद्-दीन खलजी तथा मुहम्मद बिन तुगलक की भांति फ़िरोज़ तुगलक में मुस्लिम पुजारी श्रेणी के परामर्श को न मानने का उत्साह नहीं था तथा प्रबन्ध के कार्यों में वह अपनी इच्छानुसार सुधार भी नहीं कर सकता था। उसके पास मुल्ला तथा मौलवियों के निर्णयों के साथ सहमत होने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। इसके

इस तरह स्पष्ट है कि मुहम्मद-बिन-तुगलक के शासनकाल में एक ओर तो सुलतान और अमीर वर्ग के बीच और दूसरी ओर अमीरों के विभिन्न वर्गों के बीच विशेषकर पुराने अमीर वर्ग और नए विदेशी अमीर वर्ग के बीच संघर्ष और वैमनस्य रहा। सुलतान ने अमीरों को बराबरी का दर्जा देने से इंकार कर दिया, उनके पैतृक अधिकार और सम्मान की परवाह नहीं की, अमीर वर्ग के ढाँचे में परिवर्तन किए और अमीरों की नई श्रेणियाँ खडी कर दीं, अपने आदेशों और अपनी योजनाओं को जबरदस्ती लागू करवाया और जब किसी कारण से योजनाओं और आदेशों का क्रियान्वयन नहीं हो पाया तो बिना उचित अनुचित का विचार किए उसने अमीरों को कठोर दण्ड दिए। इस तरह उसने एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी जिससे अमीरों के विद्रोहों का तांता लग गया और सल्तनत को गहरा आघात पहुँचा। पर इस सम्पूर्ण

उद्देश्य

मुहम्मद बिन तुगलक ने जो दोआब में कर वृद्धि की थी वह विवाद के क्षेत्र में रहा। बरनी ने जनता तथा प्रदेश की खराबी के लिए दोआब में कर वृद्धि सुल्तान का पहला कार्य बतलाया है। बाद के लेखक बदायूँनी के अनुसार कर में वृद्धि दोआब के लोगों को दंडित करने के लिए की गई। वूलजेहेग इसको दण्ड देने वाला कार्य मानते हैं। गार्डनर ब्राउन ने इसको आवश्यक तथा सही कार्य माना है, क्योंकि दोआब सबसे अधिक उपजाऊ प्रदेश था।

ईश्वरी प्रसाद के अनुसार, कर में वृद्धि नई योजना विशेष रूप से कराचल के आक्रमण के लिए धन संचित करने के लिए की गई थी। मेहंदी हुसैन का मत है कि सुल्तान को बाध्य होकर कर बढ़ाना पड़ा क्योंकि खुरासान की विजय के लिए संगठित सेना को खत्म करने के कारण किसानों की संख्या बहुत बढ़ गई थी और सांकेतिक मुद्रा की असफलता के पश्चात् धन में कमी महसूस की जाने लगी।

5-10%

कर वृद्धि की मात्रा

मुहम्मद बिन तुगलक ने जो राजस्व नीति निर्धारित की उसका प्रमुख अंग था राजस्व ये वृद्धि करना लेकिन राजस्व में यह वृद्धि साम्राजय के सभी भागों में न करके केवल दोआब में की गई क्योंकि दोआब इसके लिए उपयुक्त था यहां

उद्देश्य

ईश्वरी प्रसाद ने सुल्तान की इस योजना का आधार देवगिरि की केन्द्रीय स्थिति माना है जो साम्राज्य के हर क्षेत्र से लगभग बराबर दूरी पर थी। भौगोलिक केन्द्रीय स्थिति के कारण, जिसका बरनी ने भी वर्णन किया है, सुल्तान दिल्ली की तुलना में देवगिरि को राजधानी बनाना उचित समझता था। मुहम्मद बिन तुगलक का विश्वास था कि दिल्ली की तुलना में देवगिरि में राजधानी हो जाने पर शासन प्रणाली दृढ़ व सुचारु रूप से चलेगी। इसके विपरीत दिल्ली साम्राज्य के अन्य प्रान्तों से दूर पड़ती थी, मंगोलों के आक्रमण का शिकार थी, राजस्थान के निकट होने के कारण राजपूतों के आक्रमण भी होते रहते थे और दक्षिण से तो सबसे दूर थी।

प्रचलन

सोने तथा चाँदी के सिक्के के प्रचलन के बाद सुल्तान ने ताँबे तथा पीतल के सिक्के का भी प्रचलन किया। 180 ग्राम के चाँदी के सिक्के (टंक) के स्थान पर ताँबे, पीतल (बरनी के अनुसार ताँबा तथा फरिश्ता के अनुसार पीतल) के सिक्के चलाकर उनका मूल्य चाँदी के बराबर घोषित कर दिया गया और चाँदी के टके के स्थान पर उसी मूल्य में उसी तरह इन सांकेतिक सिक्कों को काम में लाए जाने की घोषणा की गई। ऐसा करते समय सुल्तान ने यह ध्यान नहीं दिया कि सांकेतिक मुद्रा से पहले भी ताँबे/पीतल का सिक्का जीतल प्रचलित था जिसका मूल्य चाँदी के टंक से कई गुना कम था इसलिए यह भी कहा जाता है कि जीतल को ही टंके नाम दिया गया। सांकेतिक मुद्रा को जनता में मान्यता दिलाने तथा लोकप्रिय बनाने के लिए धर्म का भी प्रयोग किया गया और सांकेतिक सिक्कों पर अरबी में यह शब्द खुदवाये गये। 'जो सुल्तान की आज्ञा का पालन करता है वह ईश्वर की आज्ञा का पालन करता है, ईश्वर की आज्ञा मानो, पैगम्बर की आज्ञा मानो तथा अपने बीच अधिकारियों की आज्ञा मानो'। अरबी के अतिरिक्त फारसी में भी सांकेतिक सिक्कों पर खुदाई की गई थी। फारसी में अधिकांश सिक्कों पर 'ईश्वर की कृपा का उम्मीदवार मुहम्मद बिन तुगलक' खुदा हुआ था। सांकेतिक सिक्के प्रचलित सिक्कों से निम्नलिखित ढंग से भिन्न थे। पहले के सिक्कों पर केवल अरबी में लेख खुदे होते थे, जबकि सांकेतिक सिक्कों पर फारसी का प्रयोग अधिक था। पहले के सिक्कों पर खुदाई उतनी साफ नहीं थी जितनी सांकेतिक सिक्कों पर।

विफलता एवं परिणाम

... लेकिन उसको सही ढंग से

उपर्युक्त कुछ इतिहासकार उसे महान शासक मानने के लिए तैयार नहीं हैं। इस प्रकार जहाँ उपर्युक्त कुछ इतिहासकार उसे महान शासक मानते हैं, वहीं कुछ इतिहासकार उसे ऐसा मानने के लिए तैयार नहीं है। वासतव में सत्य इन दोनों मतों के बीच में स्थित है।

सामान्यत: इस बारे में लगभग सभी इतिहासकार एकमत हैं कि फीरोज में कुछ गुण अवश्य विद्यमान थे। वह योग्य व्यक्तियों की परख करना तथा उनसे काम लेना जानता था। उसके चरित्र की एक बहुत बड़ी विशेषता परिस्थितियों को समझने और उनसे समझौता करने की थी। अपनी इसी योग्यता के कारण वह अधिकांश अमीरों का विश्वास प्राप्त करके सुल्तान बन सका और इसी कारण वह 37 वर्ष तक शान्तिपूर्वक शासन कर सका। उसे राज्य-विस्तार की इच्छा नहीं थी और न उसमें उसके लिए आवश्यक योग्यता ही थी। अत: इस बारे में उसने कोई प्रयत्न नहीं किये। जिस समय वह शासक बना उस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता राज्य में शान्ति स्थापित करने, जनता में फैले हुए असंतोष को दूर करके उसका विश्वास प्राप्त करने तथा राज्य और जनता की आर्थिक स्थिति को सुधारने की थी। उसने इस आवश्यकता की पूर्ति करने का प्रयत्न किया और वह उसमें काफी हद तक सफल भी रहा।

वह पहला दिल्ली सुल्तान था जिसने विजयों तथा युद्धों की तुलना में अपनी प्रजा की भौतिक उन्नति को सर्वाधिक महत्त्व दिया और उसे इसकी पूर्ति में सफलता भी मिली। सभी इतिहासकार इस बारे में एकमत हैं कि उसके समय में राज्य और प्रजा दोनों सम्पन्न थे। आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव लिखते हैं कि ''वास्तव में फीरोज अपनी प्रजा का हितैषी था। उसके पहले अथवा बाद में दिल्ली के किसी सुल्तान ने अपनी प्रजा की भौतिक समृद्धि के लिए इतना कार्य नहीं किया जितना कि उसने।'' उसकी राजस्व नीति तथा उसके द्वारा बनवायी गयी नहरों के परिणामस्वरूप कृषि के क्षेत्र में काफी उन्नति हुई। उसके द्वारा अनेकों करों के हटा दिये जाने से जनता को राहत मिली और व्यापार में भी वृद्धि हुई जिसके कारण वस्तुओं के मूल्य बहुत सस्ते हो गये। एक शासक के रूप में फीरोज की यही सबसे बड़ी उपलब्धि थी। इसके अतिरिक्त फीरोज ने सार्वजनिक निर्माण के क्षेत्र में और जनता के हित के लिए जो अनेक कार्य किये, वे भी प्रशंसनीय थे। उसने अनेकों नगरों, महलों, मस्जिदों, पुलों, मदरसों, तालाबों और सरायों का निर्माण कराया था। गरीबों की सहायता के लिए उसने रोजगार दफ्तर, दीवान-ए-खैरात और खैराती अस्पताल की स्थापना की

मध्ययुग में एक शक्तिशाली सेना ही एक राज्य, शासन और सुल्तान की सुरक्षा और सम्मान की स्थापना का आधार होती थी। किन्तु फीरोज इसमें पूर्णतः असफल रहा। उसके द्वारा वृद्ध और दुर्बल व्यक्तियों को सैनिक सेवा से न निकालना और उनके पदों को वंशानुगत बना देना, सैनिकों को नकद वेतन के बदले जागीरें देने की प्रथा प्रारम्भ करना, घुड़सवार सेना का दीवाने आरिज द्वारा वार्षिक निरीक्षण की प्रथा में अत्यन्त ढिलाई बरतना आदि फीरोज के ऐसे कार्य थे जिससे दिल्ली सल्तनत की सैन्य शक्ति पूरी तरह नष्ट हो गयी। तीसरे, फीरोज को दासों का बहुत शौक था और उसके कुल दासों की संख्या एक लाख अस्सी हजार थी। फीरोज के ये दास न केवल राज्य के खजाने पर अनावश्यक वित्तीय भार बन गये थे बल्कि उन्होंने सुल्तान की अपने प्रति सहानुभूति का लाभ उठाकर शासन कार्य में भी अनुचित हस्तक्षेप करना